रात्रि क्लास 23-11-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

बाप और दादा से बच्चे अनुभव ले रहे हैं। दादा से तो अनुभव मिल नहीं सकता। दादा कहते हैं भाईयों को। बड़ा भाई छोटा भाई। बाप तो बाप ही है। तो अनुभव सुनाया होगा यहां आये हैं बाप दादा से विश्व का मालिक बनने। कितना जबरदस्त नशा है। कोई समझ न सके तुम बच्चों के सिवाय। सभी दुःखों से पार तुम होते हो। बाकी थोड़ा समय है फिर तो यह पुरानी दुनिया ही नहीं होगी। पुराने सम्बन्ध भी नहीं होंगे। फिर होगा नया सम्बन्ध। वह नया सम्बन्ध पूरा हो फिर पुराना होगा। अभी है दुःख का सम्बन्ध। इनको कहा ही जाता है दुःखधाम। बच्चों को वर्ल्ड जागराफ्ये का ज्ञान मिला है यह भी निश्चय हुआ आत्मा ही पार्टवजाता है। यह भी समझ आई अपने को आत्मा समझ बाप को याद करेंगे तो सभी दुःख दूर हो जावेंगे। सुख शुरू हो जावेंगे। बेहद के बाप से बेहद का सुख का वरसा मिलता है। समझते भी हैं फिर भी खुशी क्यों नहीं रहती। देह अभिमान में आ जाता है। माया की प्रवेशता होती। तुम्हारी है ही माया के साथ युध। बाकी पाण्डव कोई युध नहीं करते। कौरव युध करते हैं। चीन से युध हो गई थी ना। कोई समय हिन्दु हिन्दुओं से भी लड़ते थे। भारतवासी भारतवासियों से लड़ते थे। दुश्मन हो पड़ते थे। घर में फूट जब होती है तो फिर दूसरों को चान्स मिल जाते हैं। तुमको तो वरसा मिलता है। युध की बात नहीं। गुल2 होकर बाप से वरसा लेते हो। कोई से भी दुश्मनी नहीं। यह ड्रामा है। तुम खेल कर रहे हो। माया का भी राज्य आता है ना। सारी रचयिता और रचना का ज्ञान तुम बच्चों में है। तुम्हें बाप से वरसा लेते हो। याद से पवित्र बनते हो। छैवी गुण धारण करने से ऊंच देवता बनते हो। अभी तो जाना है ना। तो इस दुनिया को ही भूलना। यह दुनिया जैसे कि है नहीं। समझ में आता है यह सभी खत्म हो जावेंगे। बाकी हम आत्मायें चले जावेंगे अपने घर। अभ्यास करते2 अशरीरी बन जाते हैं। आप मुये मर गई दुनिया। सच्च2 पुरानी दुनिया खत्म होनी है। तो जैसे कि मर गई। इसलिये बाप कहते हैं तुम जो कुछ देखते हो यह सभी खत्म होना ही है। अपने को तुम आत्मा समझो। बस। फिर और सम्बन्ध ही नहीं रहता है। पुराना खलास हो जाना है। ऐसी2 अपने साथ बातें करने से बहुत मौज में आते रहेंगे। हल्के हो जावेंगे। आत्मायें कितनी छोटी हैं। आत्मा जैसी हल्की चीज कोई होगी ही नहीं। बच्चों ने अपने को, अपने बाप को जाना है। समझ मिली है हम सतयुगत्रेता में थे फिर द्वापर कलियुग भक्ति में थे। अभी संगम पर हैं। जा रहे हैं। जिनको निश्चय हो जाता है वह फील करेंगे हम प्रिन्स बनने वाले हैं। नई दुनिया का प्रिन्स। तुम भी यह बनने आये हो। जिनको निश्चय है उनको यह नशा है। तुम सच्च2 कहते हो हम प्रिन्स बनेंगे। ज्ञान है। वह भैंस का दृष्टान्त देते हैं। बोलो मैं भैंस हूं भैंस हूं। बच्चों को यह निश्चय है अभी हम नर्कवासी से स्वर्गवासी बन रहे हैं। अन्दर में सफाई चाहिए। कोई भी दुविधा अन्दर न होनी चाहिए। कोई की ग्लानी न करनी चाहिए। कोई का अवगुण गाना न चाहिए। एक दो में। अवगुण की बात किनारे कर देंगे। उनको भी दबाया जाता है। किसकी ग्लानी करना ठीक नहीं है। बाप तो शिक्षा देते हैं। कोशिश कर अक्ल के फूल न बनो। सर्विस का शौक न दिखावेंगे तो दिल पर कैसे चढ़ेंगे। स्कूल में न पढ़ते हैं तो कहते हैं हम फेल हो जावेंगे या थोड़ी मार्क्स से पास होंगे। क्षत्री घराने को फेल कहेंगे। सबसे भारती खुशी तुम बच्चों को है। हम गाड फादरली स्टुडन्ट हैं। गाड फादर बाप पढ़ाते हैं तो खुशी होनी चाहिए ना। स्मृति में रहना चाहिए। परन्तु माया भी सभी को भूला देती है। जैसे बाप टीचर सद्गुरु को भी तुम फूल प्यारे लेते हो। इन आंखों से न अपने शरीर को देखना है न शरीरधारियों को देखना है। इस समय सिर्फ तुम बच्चों ज्ञान का तीसरा नेत्र मिलता है। तुमको इसलिये त्रिनेत्री कहा जाता है। अर्थात ज्ञान का तीसरा नेत्र तुम बच्चों को मिलता है। बाकी उनको कहेंगे भक्ति का नेत्र। फिर भी बच्चों को कहते हैं बाप को याद करो वरसे को याद करो। दैवीगुण धारणकरो। आत्मा बुद्धि से यादकी यात्रा कर रही है। याद करते2 पाप कट जावेंगे और सतोप्रधान बन जावेंगे। अच्छा मीठे2 सजनी बच्चों को सजनी बाप दादा का याद प्यार गुडनाईट और नमस्ते।

****